श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल, राजस्थान का उद्बोधन

मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जयपुर
का 14वां दीक्षांत समारोह

दिनांक 19 जनवरी, 2020 **समय दोपहर 02.00 बजे**

स्थान – एम.एन.आई.टी. परिसर, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर

मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान के निदेशक श्री उदयकुमार आर यारागत्ती जी, डीन श्री के. आर. नियाजी जी, कुलसचिव श्री जय नारायण जी, शिक्षकगण, अतिथिगण, पदक एवं उपाधि प्राप्त कर रहे विद्यार्थीगण, उनके अभिभावकगण, भाइयो, बहनो, पत्रकार बन्धुओ और छायाकार मित्रो।

पं० मदन मोहन मालवीय के नाम पर स्थापित इस संस्थान में उपस्थित छात्र–छात्राओं को बधाई देता हूँ तथा इस संस्थान से बाहर की दुनिया में प्रवेश करने पर आप लोगों के भावी जीवन की सफलता की कामना करता हूँ।

दीक्षान्त समारोह व्यक्ति के जीवन का अत्यंत महत्वपूर्ण पड़ाव होता है। यदि हम इसे भारतीय परिप्रेक्ष्य में समझने की कोशिश करें, तो दीक्षान्त समारोह एक व्यक्ति का अकादमिक क्षेत्र से निकलकर सामाजिक क्षेत्र में पदार्पण होता हैं अर्थात यही वह समय है, जहां से आप अपने अध्ययन से प्राप्त ज्ञान को सेवा के रूप में समाज को वापस करते हैं।

माननीय भारत रत्न डॉ० राधाकृष्णन, जो कि एक प्रख्यात शिक्षाविद् थे, ने शिक्षा को ''सामाजिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक बदलाव का साधन'' के तौर पर परिभाषित किया। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ ज्ञान प्राप्त करना ही नही है वरन् यह हमें समाज के अनुसार रहना भी सिखाता है।

शिक्षा का उद्देश्य राष्ट्र की प्रगति, संस्कृति, समावेशी नागरिकता तथा राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना है। शिक्षा छात्र के मन में साझा सांस्कृतिक विरासत, समतावाद, गणतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, लैंगिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण जैसे मूल्यों का विकास करती है।

हमारी संस्कृति एक अत्यंत प्राचीन एवं गौरवशाली अतीत को रेखाकिंत करती है। भारतवर्ष सदियों तक ज्ञानार्जन, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक विकास तथा व्यापार में अग्रणी रहा है।

पिछली कुछ शताब्दियों में वैश्विक स्तर पर ज्ञान के स्वरुप के मूल–मंत्रों में बदलाव हुए हैं, जिनकी वजह से

समस्त विकास का मापदंड, प्रौद्योगिकी एवं भौतिक संपदा को ही मान लिया गया है। समग्र विकास के लिये ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' का हमारा आदर्श हाशिये पर जा रहा है।

नई सदी, जिसका कि तीसरा दशक अभी प्रारंभ हुआ है, चुनौतियों से भरी हुई है। राष्ट्र के विकास में गति लाने के लिये जो कार्यक्रम प्रारंभ किये गए हैं, जैसे कि ''डिजिटल इंडिया'', ''मेक इन इंडिया'' एवं ''स्किलिंग इंडिया'', इन सभी की सफलता इस पर निर्भर है कि आप तकनीकी क्षेत्र में कितना शोध करते हैं। राष्ट्र के नव निर्माण हेतु इस प्रतिष्ठित संस्थान के छात्रों के कंधो पर शोध की महती जिम्मेदारी है।

भारतीय समाज ने विज्ञान एवं प्रौद्येगिकी में हर जगह अपनी छाप छोडी है। आप लोग उन अवसरों का समुचित उपयोग करें, जो आपकी प्रतीक्षा कर रहें हैं। साथ ही अपने

देश की आवश्यकताओं को भी ध्यान में रखें। यह सामाजिक जिम्मेदारी ही नहीं बल्कि व्यावसायिक समझ भी है क्योंकि व्यक्ति ही समाज की मूल इकाई है।

प्रायः देखा गया है कि उच्च शिक्षा के प्रतिष्ठित संस्थानों के छात्र शैक्षिक विकास एवं नौकरी के लिये विकसित देशों का रूख करते हैं, जो कि स्वाभाविक है, पंरतु यहां यह ध्यान में रखना आवश्यक है कि राष्ट्र एवं समाज ने आप पर जो आर्थिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक निवेश किया है, उसे ब्याज सहित वापस देना भी आपका ही दायित्व है। आप चाहे दुनिया के किसी भी कोने में हों, आपका प्रथम कर्त्तव्य अपने राष्ट्र एवं समाज के प्रति है, क्योंकि आप समाज के सबसे विशेषाधिकार प्राप्त तबके से है।

पिछली सदी ने जहां एक ओर समाज को भौतिक समृद्धि एवं तकनीकी विकास का तोहफा दिया हैं, वहीं पारिवारिक एवं सामाजिक बिखराव का काल भी वह सदी

रही। हमारी संस्कृति सबको साथ लेकर चलने एवं सघन पारिवारिक, सामाजिक बुनावट के लिये जानी जाती है।

नई पीढ़ी के तौर पर आप से यह अपेक्षा है कि आप इस विचारधारा को साथ लेकर ही नए युग मे प्रवेश करेंगे। विचारों की सात्विकता एवं चरित्र की शुद्धता न्यायपरायणता की आधारशिला है।

आज वैश्विक शांति एक अत्यंत संवेदनशील मुद्दा है, जिसका व्यक्ति से लेकर समाज तक हर स्तर पर समाधान किया जाना चाहिये। विकास जब तक शांति की ओर उन्मुख न हो, उसकी कोई महत्ता नहीं है। वैश्विक शांति के परिप्रेक्ष्य में सोचें तो, भौतिक विकास की प्राप्ति के लिये साध्य से अधिक साधन महत्वपूर्ण है।

आप अपने ज्ञान का सदुपयोग करके अपने देश के राष्ट्रीय लक्ष्यों तक पहुंचने का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। भारत को विकासशील से विकसित की श्रेणी में पहुंचा सकते हैं।

आप सभी से अपील है कि समाज में व्याप्त कुरुतियों को दूर करना आप लोग अपना उत्तरदायित्व समझें। ज्ञान को उन तक पहुंचाने का प्रयास करें, जिन्हे किसी कारण उच्च शिक्षा के अवसर नहीं मिले है।

मौजूदा शिक्षा में पूंजी की महत्ता और प्रौद्योगिकी का उपयोग बढ़ा है, पर सामाजिक न्याय व लोक कल्याण आनुपातिक रूप में नहीं बढ़ पाए हैं। समाज के आखिरी व्यक्ति तक विकास के लाभ को पहुंचाना ही आपका पाथेय होना चाहिए।

एक बार आप सभी को पुनः बधाई देता हूँ।

धन्यवाद। जय हिन्द।